उजाले में अंधेरा...

क्यों हमारा वह समृद्ध भारत,
इतना बदल रहा है?
क्यो वह सोने जैसा चमचमाता भारत ,
उजाले में अंधेरा फैला रहा है ?

कही खोयी है वह,
गाँव की खिलखिलाती सूरत!
कही खो गया है वह
हमारा समृद्ध भारत ।

धान की खेती हिलोरे लेती थी,
लेकिन अब वहा शहर बस रहे है ।
जहाँ पेड़ डोलते थे खुशी से,
वहाँ अब पत्थर के घर सज रहे है ।

गाँव के चौराहे सुने पड़े है,
और शहरो में तिल के लिये भी जगह नहीं बची।
अब किसानो को नीच और
नौकरी को ऊँचा समझने की प्रथा चल रही है।

कभी था जय जवान जय किसान का नारा ,
हम आसानी से भुल गये है ।
लेकिन अब भी जवान सरहद पर और
किसान खेती के लिये कुर्बान हो रहे है।
जो कड़ी मेहनत कर रहा है,

उसे रास्ते के किनारे रात गुजारनी पड़ती है ।
और जो भ्रष्टाचार करते है ,
उन्हे ऐशोआराम की जिंदगी मिल रही है ।

पेड काटकर लोग घर बसा रहे है ।
हजारो पंक्षियो का घर उजाडकर खुशिया मना रहे हैं।
अन्नदाता का पेट काटकर ,अपना पेट पाल रहे है
इंसानियत भुलकर ,अंधेरे में जा रहे है।

रोक लीजिए ये मुर्खता,
भारत को माँ जैसा संभाल लीजिए ।
अपनी संस्कृति को भुलकर ,
उजाले में अंधेरा मत फैलाइये ।

उज्ज्वल कुमार